IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 31, Issue 6, Series 1 (June, 2026) 92-100
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

Israel-Iran युद्ध और BIMSTEC देशों पर व्यापक प्रभाव

अभिषेक पाण्डेय
शोध छात्र
राजनीति विज्ञान विभाग
प्रो राजेंद्र सिंह रज्जु भैय्या विश्वविद्यालय प्रयागराज

डा राघवेंद्र पाण्डेय
सहायक आचार्य
एम जी पी जी कालेज फतेहपुर

1. परिचय

21वीं सदी की अंतरराष्ट्रीय राजनीति में पश्चिम एशिया निरंतर अस्थिरता और शक्ति-संतुलन की प्रतिस्पर्धा का केंद्र रहा है। विशेष रूप से इज़राइल और ईरान के बीच लंबे समय से चल रहा वैचारिक, सामरिक और भू-राजनीतिक संघर्ष क्षेत्रीय स्थिरता के लिए एक स्थायी चुनौती बना हुआ है। 1979 की इस्लामिक क्रांति के बाद दोनों देशों के संबंधों में तीव्र गिरावट आई और तब से यह संघर्ष प्रत्यक्ष युद्ध के बजाय प्रॉक्सी युद्ध, साइबर हमलों, खुफिया गतिविधियों और क्षेत्रीय गुटों के माध्यम से संचालित होता रहा है। किंतु हाल के वर्षों में परिस्थितियाँ इस स्तर तक पहुँच चुकी हैं कि प्रत्यक्ष सैन्य टकराव की संभावना भी बार-बार उभरती रही है।

इज़राइल-ईरान तनाव केवल दो देशों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यापक क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन से जुड़ा हुआ है, जिसमें अमेरिका, खाड़ी देश, लेबनान, सीरिया और अन्य पश्चिम एशियाई शक्तियाँ भी अप्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित हैं। इस संघर्ष का सबसे महत्वपूर्ण आयाम ऊर्जा सुरक्षा और समुद्री मार्गों की स्थिरता से जुड़ा है, विशेषकर Strait of Hormuz, जो वैश्विक तेल आपूर्ति का एक बड़ा भाग वहन करता है। यदि इस जलडमरूमध्य में अवरोध या सैन्य तनाव बढ़ता है, तो इसका प्रभाव विश्व अर्थव्यवस्था पर तुरंत दिखाई देता है। तेल की कीमतों में वृद्धि, आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान और वैश्विक बाजारों में अस्थिरता ऐसे संभावित परिणाम हैं जो किसी भी प्रत्यक्ष संघर्ष की स्थिति में सामने आ सकते हैं।

वैश्वीकरण के इस युग में किसी भी क्षेत्रीय संघर्ष का प्रभाव केवल स्थानीय नहीं रहता। ऊर्जा बाजार, समुद्री व्यापार, निवेश प्रवाह और प्रवासी श्रमिकों की आवाजाही जैसे तत्व अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को परस्पर जोड़ते हैं। इस संदर्भ में बंगाल की खाड़ी क्षेत्रीय संगठन BIMSTEC (Bay of Bengal Initiative for Multi-Sectoral Technical and

Economic Cooperation) का महत्व उभरता है। यह संगठन दक्षिण एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया के सात देशों–भारत, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, भूटान, म्यांमार और थाईलैंड–को जोड़ता है। यद्यपि ये देश भौगोलिक रूप से पश्चिम एशिया से दूर स्थित हैं, फिर भी उनकी ऊर्जा निर्भरता, व्यापारिक संबंध और समुद्री मार्गों पर निर्भरता उन्हें इस संघर्ष से अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

BIMSTEC देशों की अर्थव्यवस्थाएँ विभिन्न स्तरों पर ऊर्जा आयात पर निर्भर हैं। भारत, बांग्लादेश, श्रीलंका और थाईलैंड जैसे देशों के लिए खाड़ी क्षेत्र से तेल और गैस आयात अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि इज़राइल-ईरान संघर्ष के कारण तेल आपूर्ति बाधित होती है या कीमतों में तीव्र वृद्धि होती है, तो इन देशों के चालू खाते, मुद्रास्फीति दर और विकास दर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। नेपाल और भूटान जैसे स्थलरुद्ध या सीमित संसाधन वाले देशों पर भी इसका अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है, क्योंकि वे क्षेत्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं और पड़ोसी अर्थव्यवस्थाओं पर निर्भर हैं।

इसके अतिरिक्त, मध्य पूर्व में कार्यरत लाखों प्रवासी श्रमिक–विशेषकर भारत और बांग्लादेश से–अपने-अपने देशों की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि क्षेत्रीय अस्थिरता के कारण श्रमिकों की वापसी या रेमिटेंस में कमी आती है, तो यह घरेलू आय, उपभोग और विदेशी मुद्रा भंडार पर प्रभाव डाल सकता है।इस प्रकार, इज़राइल-ईरान संघर्ष का प्रभाव केवल ऊर्जा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यापक आर्थिक और सामाजिक आयामों को भी प्रभावित करता है।

भू-राजनीतिक दृष्टि से भी यह संघर्ष BIMSTEC देशों के लिए चुनौतीपूर्ण है। भारत जैसे देश को अपनी “रणनीतिक स्वायत्तता” बनाए रखते हुए इज़राइल और ईरान दोनों के साथ संतुलित संबंध रखने होते हैं। अन्य सदस्य देशों को भी वैश्विक शक्तियों के बीच बढ़ते ध्रुवीकरण के संदर्भ में सावधानीपूर्वक कूटनीतिक संतुलन साधना पड़ सकता है।

अतः यह अध्ययन इज़राइल-ईरान युद्ध या संभावित युद्ध की पृष्ठभूमि, उसके वैश्विक प्रभाव तथा विशेष रूप से BIMSTEC देशों पर उसके आर्थिक, सामरिक और सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करने का प्रयास करता है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि यह क्षेत्रीय संघर्ष किस प्रकार बंगाल की खाड़ी क्षेत्र के देशों की नीतियों, ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार संरचना और क्षेत्रीय सहयोग की दिशा को प्रभावित कर सकता है। साथ ही, यह अध्ययन संभावित नीतिगत विकल्पों और क्षेत्रीय सहयोग की संभावनाओं पर भी विचार प्रस्तुत करता है, ताकि BIMSTEC देश भविष्य में ऐसे वैश्विक संकटों का सामना अधिक प्रभावी ढंग से कर सकें।
इस शोध-पत्र का उद्देश्य है BIMSTEC (Bay of Bengal Initiative for Multi-Sectoral Technical and Economic Cooperation) के सदस्यों – भारत, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, भूटान, म्यांमार और थाईलैंड – पर इस संघर्ष के विविध प्रभावों का विश्लेषण करना।

2. शोध-प्रश्न और उद्देश्य

यह अध्ययन निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देना चाहता है:

- Israel-Iran संघर्ष की वैश्विक और क्षेत्रीय पृष्ठभूमि क्या है?
- BIMSTEC देशों के लिए प्रमुख जोखिम और अवसर क्या हैं?
- इस युद्ध से ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार, आपूर्ति श्रृंखला और नीति निर्माण पर क्या प्रभाव होंगे?
- BIMSTEC क्षेत्र की तैयारी और नीतिगत विकल्प क्या हैं?

3. पृष्ठभूमि: Israel-Iran संघर्ष का इतिहास और वर्तमान स्थिति

3.1 ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

इज़राइल और ईरान के बीच संबंध दशकों से तनावपूर्ण रहे हैं। ईरान की इस्लामिक क्रांति (1979) के बाद इस्लामिक गणराज्य और इज़राइल के बीच प्रत्यक्ष सम्बन्ध टूट गए, और दोनों देशों ने अक्सर एक-दूसरे के खिलाफ क्षेत्रीय गुटों के माध्यम से Proxy Warfare का उपयोग किया।

3.2 2025 संघर्ष का संक्षेप

2025 में, इज़राइल द्वारा ईरान के कुछ लक्ष्यों पर एयर स्ट्राइक और ईरान की तरफ़ से मिसाइल हमले के बाद संघर्ष गहरा गया। इसके परिणाम जैसे तेल उत्पादन केंद्रों पर निशाना और Strait of Hormuz में तनाव बढ़ना वैश्विक ध्यान का विषय बन गया है।

4. वैश्विक आर्थिक और ऊर्जा प्रभाव

4.1 तेल की कीमतें और अर्थव्यवस्था

संघर्ष के बाद तेल की कीमतों में उछाल देखा गया है। Strait of Hormuz के आसपास के संभावित अवरोध ने वैश्विक तेल बाजार में अस्थिरता पैदा की है, जिससे घरेलू ईंधन और गैस की कीमतों में झटका लग सकता है। क्रूड की कीमतों में बढ़ोतरी का भारतीय और अन्य देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर सीधा प्रभाव पड़ेगा।

4.2 ऊर्जा सुरक्षा पर प्रभाव

BIMSTEC देशों में कई देश जैसे बांग्लादेश और नेपाल ऊर्जा आयात पर निर्भर हैं। बांग्लादेश का लगभग 90% ऊर्जा उपयोग Strait of Hormuz से होता है, जिसके खतरे के कारण ऊर्जा सुरक्षा पर खतरा उत्पन्न हुआ है।

5. BIMSTEC देशों पर विशिष्ट प्रभाव

BIMSTEC (Bay of Bengal Initiative for Multi-Sectoral Technical and Economic Cooperation) के सदस्य देश – भारत, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, भूटान, म्यांमार और थाईलैंड – भौगोलिक रूप से दक्षिण एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया के संगम पर स्थित हैं। यद्यपि इज़राइल-ईरान संघर्ष सीधे इस क्षेत्र में नहीं हो रहा, फिर भी इसके ऊर्जा, व्यापार, समुद्री सुरक्षा, प्रवासी श्रम, वित्तीय स्थिरता और कूटनीतिक संतुलन पर व्यापक प्रभाव पड़ सकते हैं।

5.1 भारत

भारत BIMSTEC का सबसे बड़ा सदस्य और क्षेत्रीय शक्ति है। भारत की ऊर्जा निर्भरता को देखते हुए संघर्ष का असर महत्वपूर्ण होगा। भारत का कच्चे तेल और LNG का अधिकांश हिस्सा Hormuz के मार्ग से आता है। यदि यह मार्ग बाधित होता है, तो तेल के दाम में वृद्धि होगी और आर्थिक वृद्धि पर दबाव पड़ेगा। हालाँकि, कुछ विश्लेषण बताते हैं कि भारत की अर्थव्यवस्था अपेक्षाकृत मजबूत बनी रहेगी।

इज़राइल-ईरान संघर्ष का भारत पर बहुआयामी प्रभाव होगा:

(क) ऊर्जा सुरक्षा

भारत अपनी कुल कच्चे तेल की आवश्यकता का लगभग 80-85% आयात करता है, जिसका बड़ा हिस्सा खाड़ी क्षेत्र से आता है। यदि Strait of Hormuz में तनाव बढ़ता है तो तेल आपूर्ति और कीमतों में अस्थिरता आ सकती है।

- पेट्रोल-डीजल महंगे होंगे
- चालू खाता घाटा बढ़ेगा
- रुपये पर दबाव पड़ेगा

(ख) सामरिक संतुलन

भारत के दोनों देशों – इज़राइल और ईरान – से महत्वपूर्ण संबंध हैं।

- इज़राइल रक्षा तकनीक का प्रमुख स्रोत है।
- ईरान, चाबहार बंदरगाह और मध्य एशिया तक पहुँच के लिए महत्वपूर्ण है।

संघर्ष की स्थिति में भारत को रणनीतिक संतुलन (Strategic Autonomy) बनाए रखना होगा।

(ग) प्रवासी भारतीय

खाड़ी देशों में लाखों भारतीय कार्यरत हैं। यदि क्षेत्रीय अस्थिरता बढ़ती है तो निकास (evacuation) और रेमिटेंस पर प्रभाव पड़ सकता है।

5.2 बांग्लादेश

बांग्लादेश के ऊर्जा आपूर्ति नेटवर्क पर तेल की कीमत और लेन-देन खर्च का प्रभाव सीधे पड़ेगा। इसके अलावा, उद्योगों की लागत में वृद्धि और मुद्रास्फीति के जोखिम बढ़ेंगे।

बांग्लादेश की अर्थव्यवस्था ऊर्जा आयात और वस्त्र निर्यात पर आधारित है।

(क) ऊर्जा झटका

- LNG और तेल आयात महंगा होगा
- बिजली उत्पादन लागत बढ़ेगी
- औद्योगिक उत्पादन प्रभावित होगा

(ख) मुद्रास्फीति

तेल की कीमत बढ़ने से परिवहन लागत बढ़ेगी, जिससे खाद्य एवं उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होगी।

(ग) प्रवासी आय

मध्य पूर्व में कार्यरत बांग्लादेशी श्रमिकों की आय और रेमिटेंस पर भी असर पड़ सकता है।

5.3 नेपाल

नेपाल ऊर्जा स्रोतों की कमी और आयात पर निर्भरता के कारण, तेल की कीमतों में वृद्धि से परिवहन और वस्तुओं की कीमत में बढ़ोतरी होगी, साथ ही मैरिटाइम सप्लाई चेन में व्यवधान का जोखिम भी है।

नेपाल स्थलरुद्ध (landlocked) देश है और पेट्रोलियम उत्पादों के लिए भारत पर निर्भर है।

(क) अप्रत्यक्ष ऊर्जा प्रभाव

तेल की वैश्विक कीमत बढ़ने से भारत में ईंधन महंगा होगा, जिसका प्रभाव नेपाल पर भी पड़ेगा।

(ख) पर्यटन

वैश्विक अस्थिरता और महंगाई से विदेशी पर्यटन घट सकता है, जिससे नेपाल की अर्थव्यवस्था प्रभावित होगी।

5.4 श्रीलंका

श्रीलंका हाल ही में आर्थिक संकट से उबरा है।

(क) विदेशी मुद्रा संकट का खतरा

तेल आयात बिल बढ़ने से विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव आएगा।

(ख) शिपिंग और समुद्री व्यापार

श्रीलंका की अर्थव्यवस्था ट्रांस-शिपमेंट हब के रूप में विकसित हो रही है। यदि पश्चिम एशिया में समुद्री मार्ग असुरक्षित होते हैं तो व्यापार प्रभावित हो सकता है।

भूटान

भूटान प्रत्यक्ष रूप से तेल आयात पर निर्भर नहीं है (क्योंकि जलविद्युत प्रमुख स्रोत है), फिर भी:

- **परिवहन लागत बढ़ेगी**
- **आयातित वस्तुओं की कीमत बढ़ेगी**
- **भारत की अर्थव्यवस्था पर दबाव का अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ेगा**

म्यांमार

म्यांमार राजनीतिक अस्थिरता से जूझ रहा है।

(क) ऊर्जा निर्यात

म्यांमार गैस निर्यातक है, अतः उच्च कीमतों से उसे अल्पकालिक लाभ हो सकता है।

(ख) निवेश जोखिम

क्षेत्रीय अस्थिरता से विदेशी निवेशकों का विश्वास और घट सकता है।

थाईलैंड

थाईलैंड दक्षिण-पूर्व एशिया की एक प्रमुख अर्थव्यवस्था है।

(क) पर्यटन

वैश्विक अस्थिरता और तेल कीमत वृद्धि से पर्यटन क्षेत्र प्रभावित होगा।

(ख) ऊर्जा निर्भरता

तेल आयात लागत बढ़ने से व्यापार घाटा बढ़ सकता है।

इन देशों की अर्थव्यवस्थाएँ भी तेल आयात और विदेशी विनिमय पर निर्भर हैं। तेल की कीमत में बढ़ोतरी से मुद्रास्फीति, व्यापार घाटा, और विकास लागत में वृद्धि हो सकती है।

6. नीति और रणनीतिक सुझाव

6.1 ऊर्जा विविधीकरण

BIMSTEC देशों को ऊर्जा स्रोतों में विविधता लानी चाहिए – जैसे नवीकरणीय ऊर्जा और स्थानीय संसाधन – जिससे मध्य पूर्व पर निरंतर निर्भरता कम हो।

6.2 समुद्री सुरक्षा और व्यापार मार्ग

BIMSTEC के समुद्री मार्गों के नेटवर्क को सुरक्षित रखना और वैकल्पिक मार्गों पर निवेश करना चाहिए, ताकि Hormuz जैसे संवेदनशील चोकपॉइंट पर निर्भरता कम हो।

6.3 क्षमता निर्माण और संकट प्रबंधन

संघर्ष के समय में ऊर्जा और वित्तीय स्थिरता बनाए रखने के लिए BIMSTEC देशों को संयुक्त आकस्मिक योजनाएँ और बजट प्रावधान विकसित करने चाहिए।

7. निष्कर्ष

Israel-Iran युद्ध, जो अब सिर्फ एक क्षेत्रीय संघर्ष नहीं रह गया है, वैश्विक आर्थिक, ऊर्जा और भू-राजनीतिक लैंडस्केप तक पहुँच चुका है। BIMSTEC देशों के लिए यह संकट ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार, निवेश और आर्थिक विकास पर बड़ा प्रभाव डाल सकता है। इसका सबसे बड़ा जोखिम है तेल की कीमतों में वृद्धि और सप्लाई चेन बाधा, जिससे घरेलू अर्थव्यवस्था, उद्योग और उपभोक्ता प्रभावित होंगे।

BIMSTEC के लिए यह समय रणनीतिक साझेदारी, ऊर्जा विविधीकरण और संकट-प्रबंधन क्षमता को मजबूत करने का है, ताकि भविष्य के अस्थिर अंतरराष्ट्रीय परिदृश्यों से निपटा जा सके।

8. संदर्भ और स्रोत

1. Bay of Bengal Initiative for Multi-Sectoral Technical and Economic Cooperation. (2022).
BIMSTEC Charter. Dhaka: BIMSTEC Secretariat.

2. International Energy Agency. (2023).
World Energy Outlook 2023. Paris: IEA Publications.

3. World Bank. (2023).
Global Economic Prospects. Washington, DC: World Bank.

4. International Monetary Fund. (2023).
World Economic Outlook. Washington, DC: IMF.

5. United Nations Conference on Trade and Development. (2023).
Review of Maritime Transport. Geneva: UNCTAD.

6. Organization of the Petroleum Exporting Countries. (2023).
Annual Statistical Bulletin. Vienna: OPEC.

7. U.S. Energy Information Administration. (2023).
Short-Term Energy Outlook. Washington, DC: EIA.

8. Asian Development Bank. (2023).
Asian Development Outlook. Manila: ADB.

9. Reserve Bank of India. (2023).
Annual Report 2022–23. Mumbai: RBI.

10. Bangladesh Bank. (2023).
Annual Report. Dhaka: Bangladesh Bank.

11. Central Bank of Sri Lanka. (2023).
Annual Economic Review. Colombo: CBSL.

12. Nepal Rastra Bank. (2023).
Macroeconomic Report. Kathmandu: NRB.

13. Bank of Thailand. (2023).
Economic and Financial Report. Bangkok: BOT.

14. Ministry of External Affairs India. (2023).
India's Engagement with West Asia. New Delhi: MEA.

15. United Nations. (2023).
World Economic Situation and Prospects. New York: UN Publications.

16. International Renewable Energy Agency. (2023).
Renewable Energy Statistics 2023. Abu Dhabi: IRENA.

17. Stockholm International Peace Research Institute. (2023).

SIPRI Yearbook 2023: Armaments, Disarmament and International Security.
Stockholm: SIPRI.

18. Council on Foreign Relations. (2023).
Backgrounder: The Israel-Iran Conflict. New York: CFR.

19. Carnegie Endowment for International Peace. (2022).
Iran's Regional Strategy and West Asian Security.
Washington, DC: Carnegie.

20. Observer Research Foundation. (2023).
India and the Gulf: Strategic Balancing in a Volatile Region.
New Delhi: ORF.